सिसकियाँ लेता स्वर्ग

(कश्मीर डायरी)

निदा नवाज़

सिसकियाँ लेता स्वर्ग

निदा नवाज़

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2025

© निदा नवाज़

उन सभी महान लोगों को समर्पित

जिन्होंने विश्वभर में हर प्रकार की

असमानता, हिंसा, आतंकवाद

और अनिश्चितता के विरुद्ध

आवाज़ उठाई

डायरी के झरोखे से

परिस्थितियाँ जटिल, मार्मिक और भयावह हों और लेखक स्वयं उनका एक हिस्सा हो तो उन्हें डायरी के पन्नों पर उतारना मानसिक और मनोवैज्ञानिक उत्पीड़न का अनुभव देता है। बात 1997 की है जब कश्मीर घाटी की परिस्थितियाँ बेहद ख़राब थीं। मैं हद से ज़्यादा डरा हुआ और उदास था। तीन बार मिलिटेंटों के हाथों मेरा अपहरण हो चुका था, मुझे यातनाएँ दी गईं थीं और दो बार फ़ौजियों ने भी मुझे पीटा था । मिलिटेंटों की हिट लिस्ट में मेरा नाम लिखा जा चुका था और मैं एक महीने तक अपने चंद रिश्तेदारों के घर पर छुपा बैठा था। इसी दौरान मैं अपने पहले कविता संग्रह 'अक्षर अक्षर रक्त भरा' को छपवाने दिल्ली की ओर चल पड़ा। मुझे मृत्यु अपनी आँखों के सामने साफ़ दिखाई दे रही थी और मैं उसी तरह अपनी इन रचनाओं को सुरक्षित करना चाहता था जिस तरह कोई मृत्यु के बिस्तर पर अपनी वसीयत लिखने की जल्दी में हो ।

दिल्ली जाते हुए जम्मू में मेरी मुलाक़ात पंजाबी कवि अवतार सिंह पाश का हवाला देकर युवा कवि मनोज शर्मा और शेख़ मुहम्मद कल्याण जी से हुई। मुलाक़ात बहुत ही जज़्बाती थी। जब मैं दिल्ली से पुस्तक को छपवाकर वापस जम्मू पहुँचा तो जम्मू के हिंदी कवि शेख मोहम्मद कल्याण, मनोज शर्मा, अशोक कुमार, डोगरी के बड़े लेखक पद्मश्री राम नाथ शास्त्री, ओम प्रकाश गुप्त, भारत भारद्वाज एवं रमेश मेहता आदि की कोशिशों से जम्मू की डोगरी संस्था, करण नगर के हाल में मेरे पहले हिंदी कविता-संग्रह 'अक्षर अक्षर रक्त

भरा' का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम में कश्मीर विश्वविद्यालय से संबंधित तथाकथित चंद दानिश्वरों ने मेरी कविताओं के विरोध में वाक-आउट भी किया जिनमें दो जन ऐसे भी थे जो मिलिटेंटों की सिफ़ारिश पर ही प्रोफ़ेसर नियुक्त हुए थे। पुस्तक के लोकार्पण के दूसरे दिन 12 फरवरी, 1998 को मेरा घाटी लौटने का कार्यक्रम बना और प्रातः 6 बजे भाई मनोज शर्मा और भाई कल्याण जी मुझे बस अड्डे तक छोड़ने आए। न ही मेरे मित्रों को और न ही मुझे आने वाले दिनों में मेरे जीवित रहने का कोई विश्वास था । मुझे विदा करते हुए भाई मनोज जी बेहद भावुक होकर कहने लगे कि निदा नवाज़ आप जिस डायरी को लिखने की बात कर रहे थे उसको छोड़ना नहीं बल्कि कश्मीर की परिस्थितियों को पूरी ईमानदारी के साथ लिखना । मनोज शर्मा की इस बात मुझे प्रोत्साहित किया ।

कश्मीर घाटी की परिस्थितियों के साथ एक बड़ी ट्रेजेडी हमेशा यह भी रही है कि इनको पूरी तरह से किसी ने भी चिह्नित नहीं किया। हमारे देश का मीडिया कश्मीर के हालात को दर्शाते समय 'राष्ट्रीय हित' की छानी पहले लगाता है और कभी गृह मंत्रालय की प्रेस विज्ञप्तियों से आगे नहीं निकलता । मिलिटेंटों की तरफ़ से हो रहे मानव अधिकारों के उल्लंघन को देश भर में बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत तो किया जाता है जबकि फ़र्ज़ी झड़पों, एजेंसियों और फ़ौजियों की ड्रामाबाजियों और पुलिस की ज्यादतियों को हमेशा नज़रअंदाज़ किया जाता रहा है (अब ये ड्रामाबाजियाँ और फ़र्ज़ी झड़पें दुनिया के सामने आ चुकी हैं लेकिन केवल चंद फ़ौजी कर्मियों को अभी तक न्याय के कटघरे में खड़ा किया जा चुका है)। कश्मीर घाटी की परिस्थितियों को लेकर जो दृश्य हमारे देश के आम आदमी के दिमाग़ में

उभरता है वह केवल इसी मीडिया और देश भर में फैले हिंदू कट्टरवादी संगठनों के उस प्रचार के आधार पर है जो वे आम कश्मीरी को बदनाम करने के लिए कर रहे हैं। इस प्रचार में कुछ हद तक वे चंद कश्मीरी विस्थापित हिंदू भी शामिल हैं जो पूरे कश्मीरी मुस्लिम समुदाय को अपने घाटी से पलायन करने का कारण मानते हैं। ऐसा करने से उनको शायद हिंदू कट्टरवादी संगठनों की शाबाशी प्राप्त होती है।

रही बात मिलिटेंटों के हाथों हो रहे मानव अधिकारों के उल्लंघनों की, वे भी आम कश्मीरियों से छुपे हुए नहीं हैं। उन्होंने जेहाद की आड़ में, इस्लामी क्रांति लाने और इस्लामी शासन की स्थापना करने की आड़ में, वो गुल खिला दिए हैं जिनको देख - सुन कर आम आदमी के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सीमा पार के अपने आकाओं की शाबाशी बटोरने के लिए उन्होंने कितने निर्दोष लोगों की हत्या की, कितने घरों को उजाड़ दिया, कितने बच्चों को अनाथ किया, कितनी औरतों को विधवा बना दिया यह जग जाहिर है। इन मानव अधिकारों के उल्लंघन पर घाटी भर में मौजूद तथाकथित बुद्धिजीवियों का एक अनपढ़, सांप्रदायिक सोच रखने वाला टोला हमेशा पर्दा डालता आया है। सीमा के उस पार मिलिटेंटों के इन कारनामों को सदैव जेहाद का नाम देकर इस्लाम का अपमान किया जाता रहा है।

जहाँ तक यहाँ की मुख्यधारा पार्टियों का संबंध है उनमें से अधिकतर क़ौल पूर्व सेना प्रमुख के गृह मंत्रालय और सुरक्षा मंत्रालय के पेरोल पर हैं। 1947 से ही उनका दिल्ली में एक मुखौटा और कश्मीर में एक मुखौटा पहनने की आदत आज भी जारी है।

पिछले पच्चीस वर्षों के दौरान कश्मीर को लेकर बहुत कुछ लिखा गया, बहुत सी पुस्तकें सामने आईं, लेकिन उनमें से अधिकतर या तो राज्य के राज्यपालों, फ़ौजी अधिकारियों, पच्चीस वर्ष पूर्व घाटी से पलायन किए लेखकों, पश्चिमी देशों में बैठे कश्मीरियों ने लिखी हैं या उन लोगों ने जिनका आतंकवादियों के सिर पर आशीर्वाद रहा है। मैं किसी भी पुस्तक की सार्थकता पर प्रश्न उठाने की चेष्टा नहीं कर सकता। हाँ, इतना ज़रूर कह सकता हूँ कि कश्मीर के नाम पर लिखी गई और ख़ूब मार्केटिंग की गई पुस्तकों के हवाले से भी आम कश्मीरी की भावनाओं का शोषण ही किया गया। कश्मीर की ताज़ा ख़बर, कश्मीर की असली ख़बर के नाम पर बस अपनी टी. आर. पी. बढ़ाने का काम हुआ। पच्चीस वर्ष पूर्व घाटी से निकले और देश के बड़े शहरों में बसे हुए एक शांतिपूर्वक माहौल में टी.वी. चैनलों, समाचारपत्रों और रेडियो बुलेटिनों के आधार पर लिखी गई बेतुकी बातें कश्मीर के आम आदमी का कौन सा प्रतिनिधित्व कर रही हैं ? आश्चर्यजनक बात है कि इन पच्चीस वर्षों के दौरान कश्मीर से मीलों दूर देश के बड़े शहरों में कश्मीर में लिखे जा रहे साहित्य और लेखन के नाम पर दर्जनों ऐसे ग़ैर सरकारी संगठन स्थापित हुए जो हर वर्ष एक-दो बार कश्मीर के झील-ए-डल के किनारे किसी कार्यक्रम का आयोजन करके और केवल पर्यटक के तौर पर कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का लुत्फ़ उठाकर कश्मीर के नाम पर, कश्मीर में लिखे जा रहे साहित्य के नाम पर बहुत सारी दौलत और शाबाशी बटोर रहे हैं।

मैं किसी भी सूरत में एक बड़ा लेखक होने का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि मैं अपने साहित्यिक क़द से परिचित हूँ। हाँ, इतना दावा तो ज़रूर कर सकता हूँ कि मैं पिछले पच्चीस

वर्षों के दौरान एक हिंदी साहित्यकार के रूप में, एक रेडियो पत्रकार के रूप में और सब से बड़ी बात एक आम कश्मीरी के रूप में अपना जीवन कश्मीर के एक गाँव में बिना किसी सुरक्षा घेरे के बिता रहा हूँ। मैंने अपने कानों से मिलिटेंटों की धमकियाँ भी सुनी हैं और फ़ौजियों की गालियाँ भी, मैंने मिलिटेंटों के हाथों निर्दोष लोगों को मरते भी देखा है और फ़ौजियों की फ़र्ज़ी झड़पें भी देखी हैं। मैंने मुख्यधारा से संबंधित राजनेताओं की चालें भी देखी हैं और धर्म की दहलीज़ पर बैठे मौलवियों के तुच्छ करतूत भी। पिछले पच्चीस वर्षों के दौरान लिखे गए इस डायरी के अधिकतर पन्ने मैंने काग़ज़ की पर्चियों, अपने बीमार बच्चे के नुस्खों के पीछे और विभिन्न पुस्तकों के हाशियों पर लिखी हैं। ये बस वे मुट्ठी भर घटनाएँ हैं जिनका मैं साक्षी रहा हूँ, जिनको मैंने भोगा है। यहाँ हर व्यक्ति के पास लाखों अलिखित और अनकही कहानियाँ हैं जो कहीं सिसकियों में अँकुरित हो रही हैं तो कहीं एक चुप्पी बनकर पूरी कश्मीर घाटी पर छाई हुई हैं। मैं कुछ पन्ने आपके सामने केवल नमूने के तौर पर रख रहा हूँ कि आपको उन हज़ारों घटनाओं का अनुभव हो जाए जो पिछले पच्चीस वर्षों के दौरान कश्मीर घाटी में घटीं । मैं इस डायरी के बहाने आपके समक्ष सिसकियाँ लेते कश्मीर, सिसकियाँ लेते स्वर्ग को रख रहा हूँ, इस उम्मीद के साथ कि शायद आपको कश्मीर की परिस्थितियों में जीवन बिता रहे आम कश्मीरी का परिचय मिल सके।

- निदा नवाज़

14.01.2015

अनुक्रम

आतंक का आगमन और अपहरण	10
आत्मा को कुरेदती डरावनी रात	18
क्रेकडाउन में सहमा प्यार	23
मैं, दाढ़ी और डर	27
दम तोड़ता देश-प्रेम	30
निर्दय दृश्यलेख	33
कश्मीरी हिंदुओं का पलायन	38
चिनार, रात और मैं	45
थोड़ी बहकी-बहकी	47
भेड़िये के बदले भेड़	53
लोकतंत्र और बेगार	56
मिलिटेंसी से उपजा एक नया वर्ग	60
सरहदों को फलाँगती स्त्री	65
कपड़े में लिपटी सच्चाई	68
राम और रहीम के नाम पर	77
रिसते ताज़े घाव	83
ये रक्षकनुमा भक्षक	87

चील और चीते की दोस्ती 97

आतंक से रूबरू होती कश्मीरी औरत 105

भारतीय मुसलमान और सांप्रदायिकता 110

एक आम कश्मीरी का दर्द 116

वे तो जैसे थे ही नहीं 121

स्वर्ग में सैलाब 125

कश्मीर समस्या और धारा 370 131

आतंकवाद की बदलती परिभाषा और समीकरण 141

पीके से पेरिस तक वाया जम्मू व कश्मीर 148

आतंक का आगमन और अपहरण

14 मार्च, 1991

कश्मीर घाटी की परिस्थितियाँ पूरी तरह तब्दील होती जा रही हैं। जिस कश्मीरी समाज में लोग जेब में चाकू रखने से भी डरते थे उसमें क्लेंशिकोफ़ (ए. के. 47 नामक रूस में बनी बंदूक़ जिसको विशेष तौर पर कश्मीरी आतंकवाद में इस्तेमाल किया जा रहा है) दाख़िल हो चुका है। सामाजिक और राजनीतिक बदलाव के साथ ही इंसानी मानसिकता में भी परिवर्तन आ रहा है। आम लोग उम्मीद और डर के बीच कहीं पर खड़े हैं। पिछले वर्षों के दौरान कश्मीर की राजनीति बाहरी तौर पर भले ही लोकतांत्रिक रही है लेकिन भीतर से रिश्वतखोरी, कुनबा - परवरी और शोषण ने इसको दीमक की तरह चाट लिया है। राज्य सरकार परंपरागत तौर पर दिल्ली में एक भाषा बोलती है और घाटी में दूसरी भाषा । केंद्र सरकार राज्य सरकार के हाथों लगातार ब्लैक मेल हो रही है। यहाँ जो दल सरकार में होता है वह भारत का गुणगान करता है और जो दल विपक्ष में होते हैं उनको पाकिस्तानी लहजा इख़्तियार करने में देर नहीं लगती। कश्मीर के आम आदमी को हर ज़ुल्म और शोषण का इलाज मिलिटेंसी में दिखने लगा है और वह ढेर सारे डर के साथ जुलूसों में शामिल हो रहा है। कश्मीर की राजधानी श्रीनगर के केंद्रीय बस अड्डे से 'पिंडी पिंडी' (रावलपिंडी, पाकिस्तान) की आवाज़ें साफ़ सुनाई दे रही हैं। हर दिन नौजवानों की बड़ी संख्या सीमावर्ती ज़िलों बारामूला और कुपवाड़ा बसों में जाते हैं जहाँ से उन्हें सीमा पार कराया जा रहा है। उस पार से भी हर